

११२३

१२३४५६७८९१०१११२
१३१४१५१६१७१८१९
२०२१२२२३२४२५२६२७

वाचाहिय विना ~~रुद्र~~ रुद्र मद्रुं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ आसन स्थापन ॥ रुद्र मिस लेख
 नहाय ॥ रुद्र धर्क शिकान चाक चायाव धयू जायाय ॥ ॐ आ धान न कथन
 म ॥ धला साग याव धियाव न ॥ अस्य काम यि ॥ भय व सन स्य नात्राय ॥ सु वि ॥
 य निष्ठा रुद्र ॥ कर्म नू यि विष्णु दव नायू जार्थ कामयी ॥ भय व धन वि निशा ग ॥
 ॥ ॐ नै लं मां धन य ॥ आसन याव य ॥ य वि नै वे मू वी रुद्र स्वाहा ॥ ~~यू जाया~~
 ॥ ॐ कामयी भय नम ॥ ~~धया न~~ ॥ ॥ कल ख काय व ॥ ॐ दू दाने य ॥ वि
 दू रुद्र ॥ सक व रि नै हा नाव वि द्य रि हा व रुद्राय ॥ ॐ न म्नाय रुद्र ॥ नाल व

यथाय ॥ दि ग्वं धन याय ॥ हा थ जा न याव ॥ ख व स ॥ ॐ गु न् स्थान म ॥ ज व स
 ॥ गं ग ल ॥ य न म ॥ द थ स ॥ क्ली काम कला काली रुद्र दव ना ये न म ॥ ध ग स्वा
 न का याव ला हा ग स वू याव न रुद्रा व ख व स ता य ॥ ॐ क्ली रुद्र रुद्र रुद्र स्वा
 हा ॥ ॥ नमो रुद्र गुरु दिक्षा धु व आ धा न स चा द क लु ल नी य ॥ विंश नित
 त्व सहित न डी वा त्सा न व ॥ रुद्र ॥ ध म नु ॥ सु म्ना ना डी लं न थं न र्यं द व थ
 व स रुद्र म द न कमल याम् ॥ रुद्र चा द य न धि व डी ना र्यं न ॥ ध व ख व व का स
 पा य पू न् य न ॥ ॐ रुद्र दिक्षा नी व न ॥ र्यं ॥ ॐ ज व द्वा स न या व ख न ॥ ॐ का य
 वा यू ड त्ये लि रुद्र रा न थ ॥ र्यं ॥ ॐ न या द्वा स न या व न वा यून ॥ धा व

निनस
 ५

नययक॥ यं ३२ खडा क्रास गैयाव जडान ता नय॥ यन ४॥ रं १३ खडा
गैया डडडन सार्द काय अग्नित्त्य लिहव रा नय॥ रं ३४ नया क्रा
स गैया डन पाय नां धव धानी ननामिन दह नयू रा नय॥ रं ३२ खव
क्रास गैया डडवन साता नन रुसद काय सयद रा नय॥ रं १३ खव
क्रास गैया डडवन सार्द कायाव अमृत न सि ३ नपा रा नय॥ रं ३
४ नया द गैयाव गं धुद्धानी नडत्य लिहव रा नय॥ रं ३२ खवन सा
विभदर सनी नशव रा नय॥ रं ३२ सव्वी ससू पुन कथिन धानी न

शत्रा रा नय॥ सार्द॥ धमकु नडिन सवा दकु लुल निष्का काया डड
धमचक सगं॥ डीवात्मा ददय सगं प ३ विं धा ति गत्व थव थव थम
सगं॥ थ ता रु न धु द्वि ४॥ ॥ दू दय स थव के धिया डया जय तिष्ठा ॥
उं ३ धी कां रं न लं वं धं स रं हं स ४ धी काम कला का ल्या ४ प्रा ञ ०
रु प्रा ० ४॥ उं ३ धी कां रं न लं वं धं स रं हं स ४ धी काम कला का ल्या
४ जीव ० ४ रु स्मि न ४॥ उं ३ धी कां रं न लं वं धं स रं हं स ४ धी काम कला
का ल्या ४ सव्वे न्दिया नि ४॥ उं ३ धी कां रं न लं वं धं स रं हं स ४ धी काम क
ला का ल्या ४ वा दून धु दू ४ धा ग द्या ज प्रा ञ ० ४ हा ग ल्य सूर्य चि नं ति

मनुस्वराह ॥ ॥ तता देवता नृपथर्मरात्रय ॥ ॥ तता मूलप्रथादि
कलषर्षग न्यास ॥ अस्य सकदेषा कृती मनुस्य कर्दमसृष्टिर्वृहती
चुन्द ॥ धी काम कला काली देवता कौवीर्य ॥ धी ॥ कि ॥ दू की ल कौ स
वर्ग सर्वदा सर्वसिद्धय विनिश्चाय ॥ कर्दमसृष्टय नमः ॥ भा ॥ उ स ॥
वृहती चुन्दम नमः ॥ झ ॥ उ स ॥ धी काम कला काली देवता येनमः ॥
द्वय स ॥ कौवीर्य येनमः ॥ धु ॥ झ स ॥ दू ॥ धी कय नमः ॥ या ॥ उ स ॥ दू
की ल काय नमः ॥ स ॥ वी ॥ म स ॥ सर्वग सर्वदा सर्वसिद्धय विनिश्चाय ॥

रुत आनय ॥ उँ वेँ दौ अँ गुषा त्यां नमः ॥ धाँ कीँ कीँ तर्हनी त्यां स्वाहा ॥ दूँ
द्वीँ मीँ मीँ मा त्यां वषट् ॥ उँ वीँ दौ अँ नमि का त्यां दूँ ॥ दूँ अँ अँ क
निष्ठा त्यां वीषट् ॥ स्वाहा केन तल पृष्ठा त्यां अँ माय रुट् ॥ उँ वेँ दौ दूँ
याय नमः ॥ धीँ कीँ कीँ गिन स स्वाहा ॥ दूँ दूँ मीँ गि स्वाये वषट् ॥ दूँ वीँ
काँ कवचाय दूँ ॥ दूँ अँ अँ अँ नृपुत्राय वीषट् ॥ स्वाहा ज्ञाय रुट् ॥
ॐ निष्ठा दिकेन वषट् ग न्यास ॥ ॥ गंगा मातृका न्यास ॥ हाथ डो
नयाव ॥ अस्य मातृका न्यास सवक्त्र रेन वसु विनयक गायत्री

[illegible]

॥ॐ नमः॥ ऊवमिखास ॥ॐ नमः॥ खवमिखास ॥ उं नमः॥ ऊव
क्रसयत ॥ उं नमः॥ खडा क्रसयत ॥ मृं नमः॥ ऊवक्रास ॥ मृं नमः॥
॥खवक्रास ॥ ॐ नमः॥ ऊवदतान ॥ ॐ नमः॥ खडादतान ॥ नं नमः॥
थंथवा ॥ नं नमः॥ कथवा ॥ डं नमः॥ थंथूकूडसि ॥ डं नमः॥ कथ
कूडसि ॥ जं नमः॥ मनस ॥ अं नमः॥ भस ॥ कं नमः॥ ऊववाहानस ॥
खं नमः॥ डवचुला ॥ गं नमः॥ ऊवकाचला ॥ र्धं नमः॥ ऊवयचिदहा
॥ दं नमः॥ ऊवयचिदधा ॥ चं नमः॥ खववाहान ॥ चूं नमः॥ खवचू

ला ॥ र्धं नमः॥ खवकाचला ॥ र्धं नमः॥ खडायचिदहा ॥ र्धं नमः॥ ख
वयचिदधा ॥ र्धं नमः॥ ऊवकलचूकस ॥ ॐ नमः॥ ऊवयू ॥ उं नमः॥
॥ऊवयुधि ॥ र्धं नमः॥ ऊवयचिदहा ॥ जं नमः॥ ऊवयचिदधास ॥
नं नमः॥ खवकलचूकस ॥ र्धं नमः॥ खवयू ॥ र्धं नमः॥ खवयु
धिस ॥ र्धं नमः॥ कडायचिदहा ॥ नं नमः॥ खवयचिदधा ॥ र्धं नमः॥
ऊववाका ॥ र्धं नमः॥ खववाका ॥ वं नमः॥ ऊवस ॥ र्धं नमः॥ नारिस ॥
मं नमः॥ यतस ॥ र्धं नमः॥ त्रनमः॥ नूगलस ॥ नं नमः॥ त्रनमः॥ ऊ

वरुनसुनस ॥ लं मासात्मननमः ॥ वरुनिस ॥ वं भिदात्मननमः ॥ खव
रुनसुनस ॥ ॐ अस्तु ॥ लं नमः ॥ नृगलं निस्यं ऊवलाहानयचिद्वर्त्त
॥ अमिडात्मननमः ॥ नृगलं निस्यं खवलाहानयचिद्वर्त्त ॥ संधुकात्म
ननमः ॥ नृगलं निस्यं ऊवयाऽर्त्त ॥ हं या ज्ञात्मननमः ॥ नृगलं निस्यं ख
वयाऽर्त्त ॥ लं जीवात्मननमः ॥ नृगलं निस्यं नारित्व ॥ द्रयप्रमात्मनन
मः ॥ नृगलं निस्यं द्रुत्त ॥ ॥ ॐ निमाहका न्यासः ॥ ॥ क्ली १३
ऊवलासतया वखवेन सादकार्य ॥ क्ली ३४ नया द्वा सतया वन ॥ क्ली ३२

खवलासतया वखवेन सायिक ॥ थथलिका कानस्रया नयाय ॥
थथया ज्ञायामः ॥ ॥ गतानि र्या गः ॥ हृदयसद्वादधदवकमलया
दथस ॐ हृदवता ध्यानया दावमानशायचालनयूजायाय ॥ मूलम
कुलथवधिनसस्रया नयूया अलित ॥ ॥ गतयूजा सामग्री ॥ ॥
धनयाय ॥ अमुयखु ॥ लं खनदाय ॥ गं १२ ॥ ॥ वं १२ दाहर्त्त ॥ वं
१२ अमृती कलर्त्त ॥ धनमूदा कन ॥ द्रं अवशु ॥ तालययदिग्वधन
याय ॥ वीषट् ॥ शाय ॥ ॥ वत ४४ ॥ ॥ दवया ह्वनविन्दुति

काञ्चनयात्रा ॥ थयूजायाय ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ नमः ४ धर्म
विधिलावमधुलसर्ग ॥ यूजा ॥ मर्वकिमधुलाय धृष्टादिनादिदधकला
द्याफात्मनमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥
कालीदेवा अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ यूजा ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥
द्वादशकलाद्याफात्मनमः ॥ लखधन ॥ श्रीविंशतुलाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥
स्वान्त ॥ ॐ ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥
ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥

भत्यादि ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥
मूलवर्गगणयूजा ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥
कालीकायविद्वद् ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥
या ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥
स ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥
धर्मनु ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥
नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥ ॐ अर्घ्याग्रासनाय नमः ॥

सतमनु॥ ॐ गं ॥ चयमनयेव ॥ गदाव निसनसुति ॥ नर्मद सिन्धु काव
 त्रिडभ मिन्न सनिधायव ॥ ॐ १० ॥ उययथ गालगय दिग्बन्धनयाय ॥ ध
 ॥ ॐ ॥ आचमनीययागस्नानीययागस्नयनयाय ॥ ॥ धनभूतामयूजाया
 य ॥ ॐ ॥ नवगंध ॥ कामकलाकालीनम ॥ ॐ ॥ नृत्यार्थी कामकलाकाली
 नम ॥ मूलमनु ॥ धवभाउसयूया ॥ ॐ ॥ लि ॥ ३ ॥ ॐ ॥ त्यात्मायूजा ॥ ॥ तगा
 गुपयक्रियूजा ॥ ॐ ॥ गुनस्थानम ॥ ॐ ॥ गुनक्षीनम ॥ ॐ ॥ यनमगुन
 स्थानम ॥ ॐ ॥ यनायनगुनस्थानम ॥ ॥ तगा ग ॥ १॥ दिन्नयूजय ॥

आभय्या ॥ गं ॥ ग ॥ यनम ॥ नेपथ्या ॥ दौ ॥ दौ ॥ सु ॥ सय्या यनम ॥ वाय्या
 ॥ ॐ ॥ नभा ॥ रुगवर्गवासुदवाय नम ॥ ॐ ॥ नभा ॥ न्या ॥ ॐ ॥ नीलक ॥ यनम ॥ ॥
 तगादवीयायी ॥ यूजा ॥ ॐ ॥ महामयूकाय नम ॥ ॐ ॥ कर्मायनम ॥ ॐ ॥ अ
 नकायनम ॥ ॐ ॥ यथिथीनम ॥ ॐ ॥ नकसमूदायनम ॥ ॐ ॥ मांसदीयाय
 नम ॥ ॐ ॥ नक मांसदीयायनम ॥ ॐ ॥ नकवानुकायनम ॥ ॐ ॥ नवीया
 कालायनम ॥ ॐ ॥ चामयुगिकथनम ॥ ॐ ॥ महा ॥ म ॥ नायनम ॥ ॐ ॥ व
 क्रिद्धालायनम ॥ ॐ ॥ ननाकुतायनम ॥ ॐ ॥ मयूमालायनम ॥ ॐ ॥

नमः॥ क्लीं हूं दमारु नर्नं धी काम कला काली दधौ नमः॥ क्लीं नृष गन्धः
धी काम कला काली दधौ नमः॥ क्लीं हूं दम इलयं धी काम कला का
ली दधौ नमः॥ क्लीं नृषा नियथा निधी काम कला काली दधौ नमः॥
धूप वा वलखन हाय च नखा नन पूजा या य ॥ इंगड धनि मनुमा
॥ स्वाहा ॥ क्लीं नृष धूपः॥ धी काम कला काली दधौ समर्थ या मि नमः॥
॥ क्लीं नृष दीपः॥ धी काम कला काली दधौ समर्थ या मि नमः॥ क्लीं नृषा
निरुला निधी काम कला काली दधौ निवद या मि नमः॥ नैव डलख

न हाय ॥ वं धन मूदा कन ॥ नमः धक खानत ॥ क्लीं हूं दनै वा धी का
म कला काली दधौ निवद या मि नमः॥ पा ज्ञाय स्वाह तियः ॥ यम सः
॥ क्लीं नृष नाच मनी र्यं धी काम कला काली दधौ स्वधा ॥ क्लीं हूं दना मूलं
धी काम कला काली दधौ समर्थ या मि नमः॥ ॥ मूल मनु विद्या ॥
लि ३ ॥ रुं रुं रुं काली धी यादू कां पूज या मि नमः॥ रुं रुं रुं काली धी
यादू कां पूज या मि नमः॥ रुं रुं रुं काली धी यादू कां पूज या मि नमः॥
॥ रुं रुं रुं नाखा काली धी यादू कां पूज या मि नमः॥ रुं रुं रुं नाखा काली धी या

लीसिम्रुअकं सव पात्र कया लया धक लं वां भय सादा रुयं ॥ धर्म सा
 नया दाव आवा रुनादि मुदा कन ॥ अं कौ कौ ३ ॥ मूलमनुज वत्या र्थ धी
 सिद्धि लक्ष्मी नमः ॥ धर्म पण्ड्या व अर्थ आचमनीयं स्नान चन्दनं अरु
 लयनं पुष्पं धूपं दीपं मेव च पुन वाचमनीयं ॥ ॥ शुभ लि ३ ॥ ॐ
 कौ कौ लं कौ कौ नमः ॥ धी सिद्धि लक्ष्मी देवी धी याद कां यूत या मि नमः ॥
 ३ ॥ धर्म खव सधा दयुजा ॥ ॥ तथा उव समरु गियून सन्दरी वृजा ॥
 कगा ३ लि ॥ अस्या धी मरु गियून सन्दरी य ३ द धा दन मनु स्य द दिना मूर्ति

मृषिः पकि च्छन्द ४ धी मरु गियून सन्दरी देवी वां कौ कौ ४ कौ
 की लर्क च उर्वर्ग सिद्धय विनिथा ग ॥ द दिना मूर्ति ॥ हि म्रु ३ व य न म
 ॥ य कि च्छन्द स नमः ॥ कुरु स ॥ धी म ॥ गियून सन्दरी
 देवी वां नमः ॥ द दय स ॥ कौ वी जाय नमः ॥ गुरु स ॥ कौ धा क य न
 मः ॥ कौ की न काय नमः ॥ कुरु सर्व मस ॥ मम च उर्वर्ग ३ सिद्धय वि
 निथा ग ॥ ॥ ततः क ३ न ग न्या स ॥ कौ कुरु वा र्या नमः ॥ कौ न
 कौ न ३ र्या स्वाहा ॥ कौ मक्ष मा र्या वषट् ॥ कुरु कौ न ना मि का र्या कुरु

॥ कौं कनिष्ठायां वीषट् ॥ स्त्री कनकतलपुष्पायां अमुय रुद्र ॥ नर्व कमला
कुं अमत्या सयाया ॥ ६ ॥ यी ० यूजा ॥ उंव द्यतासनाय नमः ॥ उं
कुं विष्णुयतासनाय नमः ॥ उं नृदयतासनाय नमः ॥ उं ह्रीं श्वजथ ता
सनाय नमः ॥ श्री ४ सदाशिवयतासनाय नमः ॥ ध्यानपूज्यादत्त आदाव
॥ ॥ वालाकर्मभुला रासांच उर्वाक्षि प्राचनी । याश्च कुशाभा नां च सर्वम्
त्रय किं शिवरुद्र ॥ आवहनादि मूढा कन ॥ ॥ श्री श्री श्री धीमहा प्रियत्र
सूचनी देवी याई नमः ॥ धार्थ्यनयाव ॥ अर्थ ॥ श्री श्री श्री साचमनीय ॥

[illegible]

नमः शिवाय नमः ॥ भावसः ॥ गमय विष्णु नमः ॥ मृदुसः ॥ दुर्गा विष्णु
 दधी कृष्ण देवताय नमः ॥ नमः ॥ क्रीवी जाय नमः ॥ युद्धसः ॥ सारा
 हा कय नमः ॥ पाठसः ॥ धर्मार्थ काम मोक्षा विनियोगः ॥ हाता नमः ॥
 उं अच काय स्वाहा अं गुहा र्या नमः ॥ उं विच काय स्वाहा अं नी र्या स्वा
 हा ॥ उं सच काय स्वाहा अं मा र्या वषट् ॥ उं वैला सल दन च काय स्वा
 हा अं नामिका र्या द्रुं ॥ उं अस नान क च काय स्वाहा के निष्ठा र्या वी
 षट् ॥ उं अस नान क च काय स्वाहा क न लयुष्ठा र्या अमुय रुट् ॥

च काय स्वाहा २

उं अच काय स्वाहा अं दयाय नमः ॥ उं विच काय स्वाहा अं शिवाय स्वाहा ॥
 उं सच काय स्वाहा अं शिवाय वषट् ॥ उं वैला कृष्ण देवताय द्रुं ॥ उं
 अस नान क च काय स्वाहा अं गुर्याय वषट् ॥ उं अस नान क च काय
 स्वाहा अं मुय रुट् ॥ उं नित्यं नमः ॥ ॥ नमः ॥ ० युं जायाय ॥
 उं अक्षय कय नमः ॥ उं मं काय नमः ॥ उं कृष्णाय नमः ॥ उं नलदी
 याय नमः ॥ उं नलमं पाय नमः ॥ उं कल्यवृक्षाय नमः ॥ उं नक वदि
 काय नमः ॥ उं नलसिंहाय नमः ॥ उं नभारगवतं नमः ॥

नवलिवियमज्ञानसाममान ॥ ॥ तत्तावदाचनं ॥ ॐ गत्वायामि ॥ ॐ च
मलययुलि ॥ ॐ आथा जस्मान ॥ ॐ द वस्यत्वा ॥ ॐ गत्वा नात्वा ॥ ॐ बृहस्पति ॥
ॐ चत्वात्रिंशद्ग ॥ ॐ द्वात्रिंशद् वि ॥ ॐ द्वात्रिंशद्ग ॥ ॐ सय मृषय ॥ ॐ व
क्रयज्ञानं ॥ ॐ ६६ दंतिवृ ॥ ॐ नमः ॥ सयुक्ताय ॥ ॐ निदानाचनं ॥ ॥ मूल
या ॥ ॐ अम्भ अम्भिक ॥ स्ववया ॥ ॐ धीधृत् ॥ जवया ॥ ॐ समक्षदया ॥
॥ मया प्रया ॥ ॐ विश्वाननाठमसि ॥ ॐ सहस्रधीर्षी ॥ ॐ नीलितदाविन
क्रम ॥ स्ववया ॥ ॐ धीधृत् ॥ मृदाया ॥ ॐ जवया ॥ ॐ यावत्कान ॥ ॐ यविष्म

ॐ सयुक्ताय ॥ ॐ अम्भ अम्भिक ॥ ॐ जवया ॥ ॐ यद्वानन ॥ ॐ सव
सिगन्मान ॥ ॐ स्वसिनेन्दु ॥ ॐ यययु धिर्वा ॥ ॐ विश्वानना
ठमसि ॥ ॐ अम्भिक ॥ ॐ धीधृत् ॥ ॐ धृत् ॥ ॐ धृत् ॥ ॐ धृत् ॥ ॐ धृत् ॥ ॐ धृत् ॥
यारुपनी ॥ ॐ अन्नयतन ॥ ॐ नमः ॥ सयुक्ताय ॥ ॐ मन्नाहति ॥ यविष्म
॥ ॥ तत्तामूलयाजय ॥ ॥ स्ववया ॥ ॐ जवया ॥ ॐ जवया ॥ ॐ जवया ॥
वैष्णवाया प्रया ॥ ॥ तत्तामूलया ॥ ॥ नमः ॥ सयुक्ताय ॥ ॐ मन्नाहति ॥ यविष्म
त्रिलिकालिक ॥ सर्वसिद्धिपद ॥ विविकलालिनभापुन ॥ सर्वशुभयुम

देनो दू पितृकुंठा हा विजि। हंसिनी यत्र माधवी सिद्धिलक्ष्मी नमाग्राहं ॥
 यत्र मानन्दसंदायमादरुनिरुति। दृश्यव्ययविमानवदनं याहि
 मां विव ॥ धस्यति कय नय ॥ नमः श्री कृष्णाय ॥ नवीनदी नदयः
 मं नीलदी वनला च नं। वल्लवी नन्दनं वन्दः कृष्णं गायालनूयिणी ॥
 रुनदहृदलादहृनीलकृष्णतमूहजं। कदम्बकसूमाहा सुवन
 मालवित्प्रियं ॥ गलुमलुलसलमिचलत्काश्रनकलुलं। सुन
 मकारुलादावहालायातिवदसं ॥ हमाङ्गदनुलाकाटिकिनी

गाङ्गलविग्रहं। मन्दमानतसंक्षारवलिरास्तनसंचयं ॥ नचिप्रो
 वृत्तन्यावली मधननिष्ठमेषालर्मभायालिकायताभाहर्तमूह
 मूहः। वल्लवीवदनाम्ना उमधूयनमध्वरं। शिवनारिनदहालि
 ४संक्षारिश्यत्रयनं ॥ यरिनाश्रनकालिन्दी उलकलिकनास
 की। वाधयनं कसिद्धायावाहनं गर्वागलं ॥ कालिन्दी उलसंक्ष
 कृष्णतलानीलकंयितं। कदम्बयादयन्नायस्तिर्वन्द्यावन्नकचि
 ॥ कलयादलमधुसूहममलुपिकागर्तं ॥ नलमलुलसंनयनत्नास

नयनिग्रहं ॥ वस न क स माभा द स न री कृत दिग्भूखं ॥ गभवद्वेन गित्री
नम्य स्मिर्तं न स न सा न्य कं ॥ सद्य हल गल न्य रु गि नि व र्था त य व कं ॥ ख
त्रि ता ख उ ला नू क मू का सा न घ ना घ नं ॥ व च्च वा श म हं ला स कृत हं
कृत निःखने ॥ स व सी नू नू खे ४ स ध्व ज्ञा या ले न रि ती दि नं ॥ क म म नानू
मय दि स्तु च्छ व स व लि रि ॥ द लु या ॥ द त क न्ने र्जा या ले नू य ॥ रि
नं ॥ ना न दो हो मा नि गृ ध्व व द ध दा नू या न ने ॥ पी ति स सि घृ या ना ना मू य
ना न य ना त्य नं ॥ य व र्च वि न य द व र ह्वा स को ति मा न व ॥ प्रि मं धं त ह

हुं ध्वा सो द दा ति व न मी यि नं ॥ ना ऊ व त्तरु ना भ ति रु व स र्व ऊ न धि य ॥
हुं र्मा धि य मा धा ति स वा मी जा य त्ते र्व ॥ ॥ हुं नि नो त मी त न्ने र्जा या
र धा न ना रु स व ४ स मा फ ॥ ॥ हुं ना नू नि ॥ य द दि ॥ ॥ मू षा न न न म र्क
प या य ॥ द दि ॥ त य क ॥ ॥ ध र्ध न का व थ व न्ने व दा व न रु द व पू
जा या त व न ॥ स्रान च न्द न य र्था त ॥ हुं र्मा ति ॥ हुं मू र्व धू र्व र्व र्व र्व ॥ हुं
रु ह ॥ श्री म रु का ल ध्व न रे न वा य न म ॥ ॥ व द न य ॥ जा ॥
हुं मू र्मा ता ॥ हुं र्मा जा ता ति ॥ मू व दी व ज य र्मा र्वा ॥ मू व न धा दि

[illegible]

वैतः मदाखरान्तरार्थो यः पा

रुनाथं अधिवासनमल्ललात्रेन कर्तुं धीमृग्या यायेन्नमः॥ॐ
माहाधकावति॥युग्म॥पुष्पराजन॥ॐ सिद्धिरस्तु कियानमः
तिनमस्कान॥चन्दनोदकतेयस्मिन्मनसाकेनदाय॥ॐ मधुक
ठरुभंदा॥शुभ्रनिरीधनलीतलीतस्य दाषविंशुशुभ्रं सिद्धिमि
गन्धवानिना॥मण्डलपुले॥ॐ ॥धियायुथिवीनेवगन्धवानि
सूत्रपिता॥पूर्वजन्मकर्मपापदूषकतेसूक्तंरुद्र॥ॐ रुद्रजन्म
कर्तार्यायमहिजन्मनिजन्म॥वैश्विर्कर्मसूत्रंजन्मजन्मान्न
नमः॥कनपृक्षालिविद्वानामयत्नवतसो॥अखलमल्लला

यित्वैक

वे घ वा

द्वय विष्णुन (यु विवृ णु या ॥ युष्म यु विविधा का ना जाय ग वि वि
(ध कुल । तत्सर्वं कर्म ता द व न क उ निव सर्वदा ॥ ॥ **हस्यमा**
न ॥ ता रा ग सिय ॥ यत्तु वासन वाय मलुल याद ॥ यि धू णु ला दि
ला क पा ल ॥ **दधू ज या दि ॥** दू धू स धा जा ता दि ॥ **म धू स ॥** धी
कृ णु ॥ **व द सूर्ये ष्वग्नि ॥** धर्त क वा ये धून का व ल स्त न रु या व द
सिं ध स्तान ग ॥ दधू स द द न सि नू ल उ ज म जा ना क ल स वा धू द
ने स्तान स्तान द दि ॥ **म तय ॥ पू जा ला य यि धू स ॥** उ णु ला य न म ॥ उ
शू य न म ॥ उ य मा य न म ॥ उ ने शू य न म ॥ उ व नू ल य न म

॥ उ वा यु व न म ॥ उ कू व ला य न म ॥ उ षी म ना य न म ॥ उ विष्णु
व न म ॥ उ व कू ल न म ॥ ॥ **धन इ धू स ॥** उ ज या ये न म ॥ उ
वि ज या ये न म ॥ उ कू डि ना य न म ॥ उ जू य ना डि ना य न म ॥ उ
उ म्म ने न म ॥ उ स्म र्म ने न म ॥ उ मा रु नी न म ॥ उ आ क षे ण न
म ॥ ॥ **धन इ धू स ॥** उ स धा जा ता य न म ॥ उ वा म द वा य न म
॥ उ शू या ना य न म ॥ उ त लू नू षा य न म ॥ उ षी म ना य न म ॥
धन इ व न ॥ उ व नू म लु ला य न म ॥ उ सूर्य म लु ला य न म ॥ उ जू
मि म लु ला य न म ॥ उ विष्णु म लु ला य न म ॥ उ विष्णु म लु ला य न

य॥ ध्रुवदीयजयस्तु ॥ गमयति गन्तव्याय सर्वयाय यु॥ शिखि ।
 सर्वदेहय विनाय तत्त्वत्रयाय नमः ॥ अग्नौ नमः ॥ ॐ ति गम
 यति गन्तव्याय ॥ ॥ धर्मलिङ्गयमानया तय श्री गय विंश ॥ द्रव
 दधमदीय ॥ धर्मलिङ्गयमानया तय विंश ॥ ॐ वाचनं शुभं मि
 ॥ ॐ मनस्वायाय तं ॥ ॐ त्वमग्नयति ॥ ॐ नित्यं श्री गय विंश ॥
 ॥ ॥ तत्त्वदीय तत्त्वत्रय नमः ॥ तत्त्वत्रय लिखितं प्रियुजने ॥ ॐ वसवि
 हि ॥ ॐ शक्ति कारय विवामु मूर्त्य नमः ॥ ॐ वीहयद्यम ॥ ॥ स्व
 वसयुषिकाय विष्णु मूर्त्य नमः ॥ ॐ ॐ देविष्णु ॥ ॥ यथ

ॐ ॥ ॐ सर्वविष्विनासाय वक्रामु मूर्त्य नमः ॥ ॐ वक्रयज्ञ
 नं ॥ ॥ वीहिय ॥ ॐ वीहिय ॥ ॐ वीहिय ॥ ॐ स्वस्ति न ॐ ॐ
 ॥ स्वव न गिवत्वं आ दा व जवन नं ॥ नथा दा व कलसया द्रव नं
 वन ॥ ॐ वायु वाया ॥ नं ॥ कलसया रि नं ॥ ॥ अग्नय कान स गिवत्वं
 नं ॥ युजने ॥ ॐ नमः ॥ अग्नय ॥ ॐ ति गियुजा विंश ॥ ॥ तत्त्व
 उमानेन ॥ ॐ अयादिसूयाद्यं ॥ ॐ सिद्धि नं ॥ वाक्र अ सम यत्वं ॥ वा
 क्र न न सूयाद्यं युजने मस्कान न्या साद्य या ययुजा ॥ अतमयुजा ॥
 गिव शक्ति कल शरु नं ॥ ॐ गिव शक्ति कल शरु नं ॥ ॐ दमासनेन नमः ॥

पूष्यं नमः ॥ ॐ तत् स्यात् ॥ ॐ दत्तस्य त्वा ॥ ॐ स्वमत्प्रदं रिश ॥ ॐ शिवाय
नमः ॥ ॐ धाकथ नमः ॥ ॐ बुद्धयस्तु न ॥ ॐ हृदं विष्णु ॥ ॐ नमः शिवाय
य ॥ ॐ समस्त देवा ॥ ॐ धीश्वर ॥ ॐ अम्बुजम्बिक ॥ ॐ गङ्गा नदी ॥ ॥
तत्तत्मानकलसाञ्चनं ॥ ॐ आधा कस्मान ॥ ॐ ययः पृथिवी ॥ ॐ दधि
काष्ठ ॥ ॐ तं आसि ॥ ॐ मधुवाता ॥ ॐ शिवानामासि ॥ ॐ तिस्रानकल
साञ्चनं ॥ ॥ सगुण ॥ ॐ दधिकाष्ठ ॥ ॐ दीर्घायुता ॥ ॐ यां रुतनी ॥
॥ ॥ गण ॥ ॐ गङ्गा नदी ॥ ॥ वलि ॥ ॐ नभा वल्लभाय ॥ ॥ गम
यास ॥ ॐ आर्यं गी ॥ ॥ कोमानि ॥ ॐ ययया लश ॥ ॥ लमयलिङ्ग

॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ दूरायिखा पूजनं स्वस्ववदन ॥ ॐ विष्णु तथु
द ॥ ॥ कसकन ॥ ॐ समित ॥ ॥ सिधुमद ॥ ॐ धीश्वर ॥ ॥ ॐ
स्वस्तिनं ॥ ॐ धूपसि ॥ ॐ तं आसि ॥ ॐ यां रुतिनी ॥ ॐ अन्नपत्र
॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ मेना रुति ॥ ॐ यमिष्ठा ॥ ॐ यमिष्ठा ॥ ॐ त्रीषध्या ॥ ॐ
धस्माना ॥ ॐ विष्णु वनाय ॥ ॐ नित्यानन्द ॥ ॐ नमः कथिल ॥ ॐ कोमानि मयूना
॥ ॐ बुद्धवनमस्तु ॥ ॐ गङ्गा नदी ॥ ॐ तिस्रानकलसाञ्चनं ॥ ॥ धनलि
यं रुतिहासन सदा वक्त्रं कर्मायाय ॥ ॐ अयादिसूर्यार्च ॥ ॐ नमः
स्वान न्यासार्घ्या गङ्गा तपूजा ॥ ॐ गङ्गाया दिवलि ॥ ॐ कुरु संस्तुत ॥ ॐ वा

सयूजनं ॥ ॐ कार्यलो ॥ ॥ कोमात्रीयूजनं ॥ ॐ यगया ॥ ॥ लम
यलिगयूजनं ॥ ॐ यगया ॥ ॥ कोमात्रीयूजनं ॥ ॐ यगया ॥ ॥ लम
कृष्ण ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ वृद्धविष्णु ॥ ॐ वृद्धसुत ॥ ॐ अर्धशक्ति ॥ ३
॥ ॐ नमिष्य ॥ ॐ विष्णुत्राटमसि ॥ ॥ दृष्टारिष्ययूजा ॥ ॐ याचिदि
ल्लाहा ॥ ॥ नमः साययकादि ॥ ॐ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ
दृष्टारिष्ययूजा ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ
समस्तनासि ॥ ॐ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ
मूढा ॥ ॐ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ

॥ ॐ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ
ॐ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ
॥ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ
यूनात्राट ॥ नमः शिवाय ॥ ॐ
ॐ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ
ॐ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ
ॐ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ
ॐ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ
ॐ अर्धमासा ॥ ॐ अर्धयकति ॥ ॐ

॥ अङ्गाहारी ॥ यश्च गच्छेत् ॥ वदति ॥ विप्रश्च वदति ॥ यश्च वा नृपहारी ॥
 वेष्मायुगीनादियुगादति ॥ युगादति युष्मि ॥ ॥ तद्विनादति ॥ विद्विना
 यत्नधनं ॥ गिलादति समिधसह ॥ कलशदियति ॥ गिलादति युष्मि ॥
 ॥ ॥ तथा यथा कर्म ॥ यजमाननययराजन जायकाववाक्कावियेक ॥
 वाक्कावनकायाववास्यादावर्गखसलखधकावधतस्वाननयावधउम्न
 पूजायायमूलमकुनऊयलयावधनमूडाकन ॥ धूलखनदवस्तानयाच
 के ॥ विसर्जनेयादावयश्चमृगस्तान ॥ स्नानकलशदकनस्तान ॥ यश्च गच्छे
 नस्तान ॥ कायउतलखदाय ॥ वतसिधद्विष्टयशायवीगवमुशारुलनमाल

हवनीयान् ॥ यथादाठिनर्गकाभांसि इनाप्रलविग्रहा ॥ नकाकुसुमिनी
 देवी ॥ मयलाहवली ॥ पाभांसुगधनादेवी ॥ यंतवाचधन ॥ देवी ॥ चक्र
 मत्वा गती देवी ॥ धाय विपुनसुन्दरी ॥ ॥ काय ॥ गच्छुक्तमयस्व
 ॥ ॥ दिवि विपुनसुन्दरी ॥ यथा मे किं जयपूजां गृहणमदनयदाग ॥

कुरुयादशाया
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

सुदृढं तैत्तिरीयं
वाक्लिपिगमिनि
मन्त्रं नमो भगवते
आमन्त्रयन्ति ॥

सं ७१२ धीमहि सुक्ता नमो भगवते ॥ मन्त्रं ॥ ॐ स्वां नाथु थितो न
कृष्णं मन्त्रं वाहू नमिदं कृष्णं नमः ॥ मन्त्रं ॥ ॐ यस्मिन् कृष्णं ॥ व न
सामं वा न ॥ ८ ॥ ॐ नमो वा नमो ॥ नमः सिद्धं ॥ ॐ ॐ विष्णु ॥ वामन ॥ ॐ वामन
॥ यत्र भुवामि ॥ ॐ विष्णु नमो ॥ गीता ॥ ॐ श्री यत्ने ॥ यत्र नाम ॥ ॐ श्रीवर्क ॥
वोद ॥ ॐ ॐ कृष्णं ॥ कलि ॥ ॐ श्री रक्षा ॥ गन्तु ॥ ॐ स्यात् ॥ ॐ सि ॥ ॥

स्नानम् ॥ ॥ तदा दवा चर्चनं ॥ वाक्पुष्पं वदयूजामं कल्पयाय ॥ गताऽथादिपु
श्रीर्चादिविधिर्थापूजा वदमूलधनलिखवसेचादधनलिजवसेचादधनलि
चलकवर्गगणया लणयिसहितनयूजायाययनिवालपूजाती ॥ वलिहकाम
विहीत ॥ ॥ ततायजमानस्यैषविषजानकावसुसि कामनयाचकावत ॥ त
तानिर्मन्त्रनवलिमतर्हना उवासेगुननत्वादावचननसिंदूनसगुणधीर्दि ॥
सहजानतिष्ठतिष्ठायादाववाक्पुष्पं लवङ्गाय ॥ वाक्पुष्पनयविषकायावन्ना
सयाय ॥ अक्षमनुज्जययावयालखनहाय ॥ मूलगायत्रीनयश्चगहनहा
य ॥ मूलमनुनर्गशवादकनहाय ॥ ततः पितृत्वनजयनय ॥ ॐ क्रीं शालतत्वाय

स्वाहा ॥ ॐ क्रीं विद्यागताय स्वाहा ॥ ॐ क्रीं निवतत्वाय स्वाहा ॥ मूलमनुनजयनय ॥ ॐ न
ॐ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा ॥ १०८ ॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं नमः ॥ १०९ ॥
ॐ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं ॥ ११० ॥ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं ॥ १११ ॥
मयि श्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं ॥ ११२ ॥ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं ॥ ११३ ॥
वक्त्रकालिकायै धामहि सुतनगकिः पुचादया ॥ ११४ ॥ सिद्धिलक्ष्मीविद्महकालिका
यै धामहि तनगकिः पुचादया ॥ ११५ ॥ नृविष्णुनादवीविद्महक्रीं कामधुनीधाम
हि सोऽननगकिः पुचादया ॥ ११६ ॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं ॥ ११७ ॥
पुचादया ॥ ११८ ॥ गन्धनहाय ॥ गीधायथा ॥ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं ॥ ११९ ॥

त्रिगुणानसंनयसूर्यमस्तुन विनिश्चितं ॥ ॥ प्रितत्वन आदृति विय ॥
ॐ दुं आत्मतत्वाय स्वाहा ॥ घृणन ॥ ॐ वक्रयस्तन ॥ त्वाय ॥ आदृति ॥ ॐ दुं विय
तत्वाय स्वाहा ॥ घृणन ॥ ॐ दुं विष्णु ॥ त्वाय ॥ आदृति ॥ ॐ दुं शिवतत्वाय स्वा
हा ॥ घृणन ॥ ॐ नमः ॥ वाय ॥ त्वाय ॥ मूलन आदृति ॥ १० ॥ घृणन ॥ ॐ मना
दृति ॥ युति ॥ ॥ धृगं ॥ धन विधि ॥ ॥ तनुया दवगायुजा ॥ पुनवधुन
मावक्रिष्टुं नगक मात्रकाशन विधि वा विधि वः सर्वः ॥ तत्त्व विधिवता ॥ ॐ
कात्राय नमः ॥ ॐ वलुमभनमः ॥ ॐ अग्रय नमः ॥ ॐ वक्रलनमः ॥ ॐ नागाय
नमः ॥ ॐ क्रमात्राय नमः ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ॐ विश्वदवाय

नमः ॥ ॐ सर्वदवतायानमः ॥ ॐ मियुजनी ॥ ॥ तत आचार्य यजमानदवयाह
वनवदाव न्यास यजमानयाज विवासनपवित्रादहं आचार्यदिन ॥ ॐ
॥ ॐ अयादि ॥ ॐ कालात्मना त्वया दविः यदृष्टमानक विधि
। कर्तृक्रिष्टं समस्तं कृष्टं गुर्यं च मत्कर्तुं । तदमुं क्रिष्टं मत्क्रिष्टं कृत्यं मत्
कर्तुं । सर्वे ते नामनाद विः यविष्णु त्वदिच्छुया । समस्त विधिवच्चिदं पुन
जायय विष्णुर्क । तस्मिन् द्विमनूजानी हिः यजन्त हि यविष्णुर्क । सर्वथा सर्वदा द
वि नमस्तु मुयसीदम । आ मन्त्रिणा सिदवशिः सह दद्या मलं श्वनः मन्त्रिणा
लाकपालेभ्यः । सहिनः यविवाचकेऽनिवदया म्यहं उर्य । यरातलुय विष्णुर्क

हा॥ उं कूर्म त्रयाय विष्णुवर्गधय विष्णुर्कनमः॥ षडंगनयूजा॥ २॥ द्वादश
कननऊयनय ३॥ द्वाय॥ उं नमो रंगवतं वनाह त्रयाय रुरुवः स्वः स्वाय
तथरुयतिस्तुभदहिदाययस्वाहा॥ उं वनाह त्रयाय विष्णुवर्गधय विष्णुर्कनमः
॥ षडंगनयूजा॥ ३॥ नवसिंह॥ द्वादश कननऊयनय ३॥ द्वाय॥ उं कूर्म नमो
रंगवतं नवसिंहाय द्वाला मालिनदी फट्टं क्षय अग्नि नगाय सर्व नक्षत्राय सर्व
रुग विनाशनाय सर्वकल विनाशनाय दह २ पच २ नद २ दू २ रुद्र स्वाहा॥ उं
नवसिंह त्रयाय विष्णुवर्गधय विष्णुर्कनमः॥ षडंगनयूजा॥ ४॥ वामन॥ द्वा
दश कननऊयनय ३॥ द्वाय॥ उं नमो विष्णुवर्गधय तथ महोवलाय स्वाहा॥

उं वामन त्रयाय विष्णुवर्गधय विष्णुर्कनमः॥ षडंगनयूजा॥ ५॥ यनशुनाम॥ द्वादश
कननऊयनय ३॥ द्वाय॥ उं कूर्म उं विष्णुवनमः॥ उं यनशुनाम त्रयाय विष्णुव
र्गधय विष्णुर्कनमः॥ षडंगनयूजा॥ ६॥ श्रीनाम॥ द्वादश कननऊयनय ३॥ द्वाय॥
उं नमो रंगवतं त्रयुनन्दनाय त्रयाय विष्णुवर्गधय मधुनयुगनवदसायामितम
ऊषवलाय नामाय विष्णुवनमः॥ उं श्रीनाम त्रयाय विष्णुवर्गधय विष्णुर्कनमः॥
षडंगनयूजा॥ साता॥ उं श्रीनाम त्रयाय विष्णुवर्गधय विष्णुर्कनमः॥ उं शाता त्रयाय वि
ष्णुवर्गधय विष्णुर्कनमः॥ षडंगनयूजा॥ ७॥ वनरुद्र॥ द्वादश कननऊयनय ३॥ द्वाय॥
॥ उं श्रीसंकर्षणाय नमः॥ उं वनरुद्र त्रयाय विष्णुवर्गधय विष्णुर्कनमः॥ षडंगनयू

वदूकदधुहसमहासलुक्कुलवलिंगक्र २ सर्वत्रदीकनूरुदलनस
वेदिघ्नानवाने २ दूरुदुनमः स्वाहा ॥ ४ ॥ कवलि ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
स्वाहा महाकप्रयातुं मन्त्रलिङ्गक्र २ दिक्कट्टुदुयाममनियूनचर्व २ छद
२ दूरुदुनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
गिचः कनकलितकपालाहुं मन्त्रलिङ्गक्र २ मन्त्र सिद्धियुक्त २
सर्वभक्तिभक्तनूरु २ दूरुदुनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
वदार्चनयथाविधि ॥ धूपदीपदलनीवयतामूलसमर्थ ॥ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
लमकुजयधन १०७ जयसमर्थ ॥ वामदक्षिणसचादया ध्यान २०

[illegible]

ध्रुवान्तराय ॥ नायकाल ॥ ॐ तिदवाचनकमभाकृति ॥ ॥ नमस्तथाकृति ॥ नत्ता
 दसयजमानाचार्ययार्तश्रुति ॥ यजमानयुति ॥ दध्यादिशानिकाकृति
 ध्रुवकोकृति ॥ दववाकृति ॥ वीरिहाम ॥ वलियदान ॥ घृतदीपवृत्तिका
 म ॥ पायश्चिरुहाम ॥ यवधन्यादिवृत्तिकावलिसर्त ॥ वलिहलन ॥ दववाकृति
 दिदक्षिणादान ॥ वाचन ॥ संधवयाजन ॥ पुनीतारिषक ॥ विद्वान्मनी ॥ त
 तथ्यु ॥ ॥ ॐ दवागमु ॥ ज्ञाययस्वस्वति ॥ ज्ञासंसा ॥ मधुलकोरु ॥ ज्ञ
 दायस्थत्यादि ॥ ज्ञानध्यादि ॥ दवाग्निकलधमनीवर्दी ॥ वक्रायलीनविसर्ज
 न ॥ वक्राकसनयनीदकनारिषक ॥ समिधहाम ॥ मधुकनर्ज ॥ शायुषीक

नर्ज ॥ कलधमदिविसर्जन ॥ ज्ञानविसर्जन ॥ ददयत्तमलिनी ॥ ज्ञानमनी ॥
 धायहाम ॥ सूर्यसादि ॥ ॥ निवडाकिकलधमदकनयजमानारिष
 क ॥ चन्दनसिन्दूरसमुद्रागिर्वदि ॥ ॥ तथ्यनावलाकन ॥ वलिहलजाव
 न ॥ ग्रामसलामयलिमकोमाजीकाय ॥ ॥ ॐ तिपविज्ञादहनविधिसमाक
 ॥ ॥ नमस्तथाकृति ॥ दवाग्निकलधमदकनयजमानारिष
 विचलावत ॥ समरुनिर्मात्यतामयतिधाय ॥ यताहन ज्ञानययथाया
 वत्तधमयवध ॥ यललाससिन्दूरनखउवायावदवन्नय ॥ पूर्वलिम
 स्वधितलनाचमनी ॥ ॐ ज्ञानदिसूर्यादि ॥ यजमानस्यगीकृष्णमूर्ति ॥

तिष्ठन्मासमीपूजाविधिः ॥ तत उत्थान द्वादशी कर्तव्यं यथा ॥ द्वादशी कर्तुं
 द्वादश वर्षा पूर्य के धन लिख पूर्य धन लिख दय नये ॥ दवत्वे उत्थान यो
 यमनुष्ठातुं चन्द्रपुमांश्च रुवा नृषीव नितवान्दनायः पाका गवैर्यकि
 लकी मृदा खाजा गृह्यथला कनाथ मिद्या गति निर्मलपूर्य चन्द्रभान यस्या
 निमना रुनालि अरुद दाना तिचय पूर्य दत्तां जा गृह्यजा गृह्यथला कनाथ
 ॥ उलिष्टा तिष्ठन्मास विन्दे त्यज निडां जगत्येतां त्वया चास्थीयमान न उल्लिखन्
 पुवनैर्य ॥ ॥ धन धूनका व विधि धी पूजा याय जय भ्रातृतां ॥ धवन मई
 दवदशावता लपूजा ॥ दवदक्षिणा ॥ दवाशिर्वा द ॥ यजमाना रिषक च

च नाशा गीर्वा द ॥ ॥ अथरुल ॥ नर्वक म्मा नि कृव नि द्वादश्यां यय धा सिन
 शम मरुका नन पुष्ठा रुया निये नर्मा गति ॥ ॥ उत्थान द्वादशी कर्तव्यं ॥
 ॥ ॥ अथरुल भुन कर्तव्यं ॥ दवदत्ताना दि कर्तव्यं ॥ पूजा सै क ल्य या दव वि
 धि धी पूजा धून के ॥ महा दवदशावता न आदि न पूजा धून के ॥ दक्षिणा ॥
 यजमाना रिषक च च नाशा गीर्वा दत्तां धून के ॥ दवयित रुया व यजमान
 न चरुः समन हान के धन लिखि धून हाना व या या या रुह या व यल कि स
 र्थ दव दान या य ॥ दवन की र्त्तन या च के ॥ धून दव दवल स दु गय दव थ
 य सैत ॥ अथ च पूया दत्ता थ ॥ ॥ तथरुल ॥ तीर्थ चि नाम ली ॥ पूर्यमा

गता ॥ ॐ गन्धद्वानी ॥ पूजायाय ॥ ॐ पूर्वसमूदाय नमः ॥ ॐ समूदाय मिमिक्ष
मा ॥ ॐ उदा नद्वया ॥ ॐ सना सममृतत्वमान ॥ ॐ तस्य नाम गुह्यं यदस्ति ॥ ॐ
दवानां सममृतस्य नारि ॥ ॐ ॐ दिवसमूदाय नमः ॥ ॐ समूदाय त्वावाताय स्वा
हा सलिलाय त्वावाताय स्वाहा जनाध्व्याय त्वावाताय स्वाहा प्रणिध्व्याय
त्वावाताय स्वाहा सिमिदाय त्वावाताय स्वाहा अपवय त्वावाताय स्वाहा
॥ ॐ यश्चिमसमूदाय नमः ॥ ॐ समूदं अष्टा सलिलस्य मन्त्राणां गुनाय
न विष्णोः ॥ ॐ उदाया वजी वृषः शाललाट ज्ञाया दधीनिहमा वदेत् ॥ ॐ उरु
न समूदाय नमः ॥ ॐ समूद त्वावृमना ज्ञान नृच दा ॥ ॐ धिवा ज्ञान उच्यते

हृदीयेत्वा जडसितस्त्रिवा ० समयामयस्कमहिषाँवेदुने ॥ धूयदीयत ॥ ॥
 तदादवतास्तानयश्चमृतस्तानजलस्तान ॥ पूर्वकलधनस्तान ॥ ॐ समुद्राद्रिभिः ॥
 दक्षिणकलधनस्तान ॥ ॐ समुद्रायत्वा ॥ पश्चिमकलधनस्तान ॥ ॐ समुद्राद्रिभिः ॥
 ॥ उत्तरकलधनस्तान ॥ ॐ समुद्रत्वाष्टमना ॥ विधिध्वचन्दनादिस्तानत ॥ तन्नाय
 धाकयुक्ताजनपूजायाय जायस्वायता ॥ धवनमहाधवदधवता न पूजाया
 य ॥ दक्षिणतयके ॥ धवागा वीद ॥ चनला दकनयजमाना किं धुकेचन्द
 नायागा वीद ॥ ॥ धनधूनकावधवयितरुयावदक्षिणमूरुनयदावत्य
 क्षियिवभगयावलाकनदर्शनयाचक ॥ ॥ तद्दर्शनस्यरुल ॥ तस्मिन्

कालउयामर्त्य ४ यध्यक्तियुत्रधारुम ॥ दृष्टानत्राद्ययत्नान्नयातिनाम्युगम
 धाय ॥ तस्मात्तन्नावानाजीवाये ॥ धर्तयुत्रधारुम ॥ ततः समसुधा धनितरु
 त्थानादिकं रुल ॥ तान ॥ धनकयुस्यतायेनात्मारिषिचयन ॥ यायुवकीयि
 तान् कामानयानचाकृन्निधयितान ॥ पुन्यानि यानितायानि निषेधनिध
 नलीगल ॥ तानिस्ताना ॥ धनिकलानाहनि ॥ ॐ ॥ तस्मात्तानवध
 र्ययत्नयुस्यसलिलदिजा ॥ अत्युधसर्वगोर्ना सर्वकामयुद दिन ॥ सा
 तैपुश्रुतिथकृष्णकुजर्तदक्षिणमूरुखक्रुदत्यादि रिः यायेर्मवागना
 तस्यैय ॥ अथकिवेदनाकनराषितनपूनः पूनः शयक्तिश्चिक्थितना

पुरुलंयुधस्य कर्मलभा वदभा शुभं नालचं द्विजसिद्धिमा ॥ धर्मभा शुभसु
 वीरुतधमन्युममभा विरिभा दद्वाननालरुत्तुर्नरुलंददिभा मूरु ॥
 निशुभं शुभमासी कृत्य ॥ ॥ अथ आरुदादभा कृत्य ॥ शयनद्विदभा
 कुरुविधिर्धनानादिधनकावचननखाननयावमऊति ॥ धनवयूजाया
 यजायस्तुतां धनका ॥ धवनमहादवदभा वनाययूजायाय ॥ ददिभा ॥ दवा
 भावद ॥ धनधनकावभाषभायाददिभा रुरुसतयकं लाय ॥ यूजायाय ॥ स्नान ॥
 उं सस्तिनं ॥ धनन ॥ उं यदयक ॥ स्नानन ॥ उं यांरु लिनी ॥ यूजा ॥ उं विष्णुन
 नाट ॥ उं ना संसविगु ॥ उं सरुप्रभाभा ॥ धनयूजायाय धनका वदवर्ता शयनया

चककागनरायक ॥ ८ कासल श्रीत ॥ रुससचुर्नभा ॥ धनलिवनभा दकन
 यजमानारिधकचननायाभा वीर्द ॥ ॥ अथरुली ॥ श्रीलोक्षी भाषयय
 कआषाद्यां संविभा द्विर्नि ॥ निडात्यजति कार्ति कानितरु यूजयत्सदा ॥ वृद्ध
 हंत्यादिकं यार्थदियुभवद्याहति ॥ ॥ शिथयनद्विदभा कृत्य ॥ ॥ अथद
 मनानाहविधि ॥ धवनका कथुकु वलक्षि धवनययाथलसर्वदा वअधिवासन
 याय ॥ ॥ तता द्वावदकभाहामुर्लखकादावसंकल्ययाय ॥ ॥ उं अयादि ॥
 मानवभाषत्यजयग्रा सिद्धिनवर्तिहमलुदवस्यभा ॥ ॥ ॥ दवतायावय
 यूजासां गार्थ ॥ ॥ कुरुदमनात्रावमकर्मधिवासमहंकविश ॥ धनसं

कल्याणादावविष्णुगिवगलशासूर्यपेशायवातनयूजायाया ॥ विष्णुयूजा ॥
ॐ ह्रुक्कुवः ४ स्वः ४ र गेवनशाविष्णु ॐ हा गच्छ ॐ हतिष्ठ नूतानिया आर्घ्यचिमनीय
स्तानीयानिरुगवत विष्णुवनमः ॥ ॐ नृषर्ग ॐ विष्णुवनमः ॥ नृगत्यर्षी विष्णुवनमः
॥ नृधूया विष्णुवनमः ॥ नृषदीया विष्णुवनमः ॥ ॐ दनेवर्ग विष्णुवनमः ॥ शु
भ्रलि ३ ॥ ॐ विष्णुवनमः ॥ ॥ गिवयूजा ॥ ॐ ह्रुक्कुवः ४ स्वः ४ ग्रामहादवर्ग ॐ हा गच्छ
ॐ हतिष्ठ नूतानिया आर्घ्यचिमनीयस्तानीयानिमहादवायनमः ॥ ॐ नृषर्ग ॐ
महादवायनमः ॥ नृगत्यर्षी महादवायनमः ॥ नृषधूया महादवायनमः ॥ न
षदीया महादवायनमः ॥ ॐ दनेवर्ग महादवायनमः ॥ शुभ्रलि ३ ॥ ॐ नमः

गिवाय ॥ ॥ गलशायूजा ॥ ॐ ह्रुक्कुवः ४ स्वः ४ गगयत ॐ हा गच्छ ॐ हतिष्ठ नूता
निया आर्घ्यचिमनीयस्तानियानिगलयतयनमः ॥ नृषर्ग ॐ गलयतयनमः
॥ नृगत्यर्षी गलयतयनमः ॥ नृषधूया गलयतयनमः ॥ नृषदीया गलयत
यनमः ॥ ॐ दनेवर्ग गलयतयनमः ॥ शुभ्रलि ३ ॥ गगलयतयनमः ॥
॥ ॥ ह्रुक्कुवः ४ स्वः ४ शासूर्य ॐ हा गच्छ ॐ हतिष्ठ नूतानिया आर्घ्यचि
मनीयस्तानीयानिह्रुक्कुवः ४ स्वः ४ शासूर्यायनमः ॥ ॐ नृषर्ग ॐ शासूर्यायनमः ॥ नृगत्यर्षी
शासूर्यायनमः ॥ नृषधूया शासूर्यायनमः ॥ नृषदीया शासूर्यायनमः ॥ ॐ दनेवर्ग शासूर्यायनमः ॥ शुभ्रलि ३ ॥ ॐ शासूर्यायनमः ॥ ॥ गताभूलमन्त्रश्रुमकीदय

ॐ ह्रीं गच्छ ॐ ह्रीं तिष्ठ नृता नियाद्या घाघ्रमनीयस्तानीयानियाजमकीदधेन
मशा ॐ मूलमर्क उषर्गंध ४ अमकीदधेनमशा मूलमर्क नृता नियाजमकीदधेन
नमशा मूलमर्क उषधूय ४ अमकीदधेनमशा मूलमर्क उषदीय ४ अमकीद
धेनमशा मूलमर्क ॐ दं नैवर्डी अमकीदधेनमशा मूलमर्क नृता ३ ॥
॥ गता ४ कामदेव ध्यानया दावयं चायया नृता पूजायाय ॥ की कामदेवा
यया आघाघ्रमनीयस्तानीयानि ॥ नमशा ॥ उषर्गंध ४ की कामदेवाय नमशा ॥ न
तयर्षी की कामदेवाय नमशा ॥ की उषधूय ४ कामदेवाय नमशा ॥ की उषदीय
४ की कामदेवाय नमशा ॥ की ॐ दं नैवर्डी कामदेवाय नमशा ॥ पूषा ३ ॥

की कामदेवाय नमशा ॥ ३ ॥ राधजा नृता वयनय ॥ कचर्य लंजगत्कारु
कचकयातिदायक ४ वक्रसूनामलारागः नृता नीसूखावह ॥ लंजनीना
लंजनीना ॥ दमने ४ लंजनीना ॥ अर्चयिष्याम्यदिका र्चा ॥ यनियूत्यर्थमी ४ वन ॥
अर्चगंधादि ॥ ॥ क्रमा नीसूखलसहिहिन ॥ ॐ नृता रुर्न ॥ नृता काचुचाक
नीना ॥ ॐ लंजनीना ॥ ॥ मर्तन्नायकावता ॥ नमस्कानयाय ॥ धनदूधक
दूयाविधि ॥ ॥ गता ४ सनिकूदूयाययादगी कूदूनादिनित्यकर्मधून
कावधवनया रिनर्वन ॥ आचमनया ॥ यामजृष्यादिकनयउ ३ न्यासयाय
॥ यथायचानन कामदेव पूजायाय दूवनवीयावितया विधि ॥ ॥ रगवन्कामदे

वदमस्व॥ धनदमायादावकिसियादननदावयकंधवनऽयावयासुगुनि
 सनय॥ ॥ गताहामयाय॥ यः गवासाधनादिकुलुऽधनादिअग्निस्त्राय
 नेयुस्त्रितिनविधिऽधृतादुनितिलादुययुर्कंधननावविधिऽधदेवयुजा
 आयुस्त्रानकलदानधनक॥ सकलताविधियविशेषादनर्थ॥ ॥ गतामेध
 कर्मसदमनलसायेनिर्मचूनवलिमतरुंताउचासगुणनत्वाय॥ चन्दना
 दिसगुणशाब्दीदंशरुआनतियुनिष्ठासावावयकतर्यलखनधालधस्य
 हामथायसयदावेहामयाकवाक्कलवज्ञाय॥ वाक्कलनचासनावेदि
 धेवद्ववनकय॥ न्यासयादावऽगामयनहाय॥ उमानस्त्राक॥ धियातास

ॐ ४

नञ्जयगवाय॥ गतामूलमनुयदयावयजमाननस्त्रिषासवतुयक॥
 दवेयाऽधियातासनञ्जयगवाय॥ ॥ धनयानायामयादाव॥ क्रीञ्जु
 शाखानमः॥ ४०॥ दियेष्टीर्घकामवीजनकवाङ्मयासयाय॥ धरिऽय
 दवनयुजायाय॥ क्रीमहामलुकनमुऽस्वाहा॥ उं क्रीकृमयिनमऽस्वाहा
 ॥ उं क्रीऽषायनमऽस्वाहा॥ उं क्रीयुथियेनमऽस्वाहा॥ उं क्रीसमूहस्थान
 मऽस्वाहा॥ उं क्रीयवर्गस्थानमऽस्वाहा॥ उं क्रीभयायनमऽस्वाहा॥ उं क्रीवैक
 स्थानमऽस्वाहा॥ ॥ गतादमनयुजा॥ गयणी॥ क्रीअर्नगयविप्रहका
 मदवायधीमहि॥ तनादमनकऽयुधादया॥ ॥ धनयणीउच्चावयादाव

सिद्धये नमः॥ धैर्ये नमः॥ धूर्ये नमः॥ दीर्ये नमः॥ नेवर्त्तने नमः॥ पुनराचमनीयं
नमः॥ गायत्री नमः॥ लिङ्गं ३॥ गायत्री नमः॥ यय १०॥ कर्त्तुं॥ विष्णुपूजमहा
गङ्गादानन्ददायकं॥ त्रिपुत्रीपुत्रालोकनाथतथाविष्णुविष्णुयक॥ अङ्गुली
दि॥ ॥ ततः॥ अङ्गुलीविष्णु॥ कौशल्यातत्त्वाय स्वाहा॥ उर्वराय स्वाहा॥ शिवान
धवनत्त्वाय॥ कौशल्यातत्त्वाय स्वाहा॥ उर्वराय स्वाहा॥ कौशल्यातत्त्वाय स्वाहा॥
उर्वराय स्वाहा॥ कौशल्यातत्त्वाय स्वाहा॥ उर्वराय स्वाहा॥ कौशल्यातत्त्वाय स्वाहा॥
मधुय॥ मूलमङ्गुलीविष्णु॥ उर्वराय स्वाहा॥ ययि॥ ॥ दवयादव
नर्वदावद्वेगाङ्गुलीविष्णु॥ कौशल्यातत्त्वाय स्वाहा॥ ययि॥ ॥ दवयादव

की। स्वामदेयनीदास्य^{मि} यश्च नूज्ञातवयुः॥ ॥ तत्ताधवनस्यार्थनायाय॥
इत्यातऊनिर्गद्वृत्त्यनकार्यधनसिक्त्या। तच्च नानेदवतायाः एकविद्यान्यच
नममः॥ धनार्थनायादावधवनः यावयापुच्छुगुनिसत॥ ॥ धनधनका
वयविगात्राह नयाक्रमनं थवथवसमूलमनुपनयावच्छास्यीहय॥ अधि
वासनच्छायममाल॥ चयानरुकाच्छासनगाक॥ वलिविये॥ जयका
याय॥ ॥ तत्ताधवार्चनक्रम॥ कृतिविद्यावथवथवसवदनधनदायाव
यूजाकंथनत्वाय॥ मूलश्रुति ३॥ उमनाकृति॥ यतिष्ठासकलंदवत्वाय
तायदान॥ ॥ तत्ताधवार्चनकृति॥ ताजादसयजमानाचार्यदशयातिश

निकपूषिकवीरिहामवलियदानमेवदुदर्शनवृत्तिकारामयायशिरु
हाम॥ वलिविसर्जने॥ दक्षिणादान॥ संपूषिकृति॥ आसीसाक्षारु॥ दवान्ना
गिर्वादि॥ वक्रायथातविसर्जने॥ कलशविसर्जने॥ जग्निविसर्जने॥ न्यास
श्रवणायाधामस्वीकृत्य॥ गवहाम॥ अचमने॥ सूर्यसादी॥ ॥ तत्तायज
मानकलशदकेनारिषकचन्दनसिन्दूरसगुलोशीर्वादि॥ दवयाचन
दकस्नानकाय॥ दयलोवलाकने॥ सकलसुधवननज्राशीर्वादविय॥
नरुसज्जुसगय॥ ॥ रुतिदमनाथावनविधिसमायुक्त॥ ॥
थयविगात्राह नरुसर्जने॥ ॥ यविगात्राह नविष्ठाशुकिमूकिरुलयदीआ

यः कीर्तिः यदं नृणां सखसम्यक्लयदं । यन्नो नानुयगः यन् सर्वयायदं
 ननु । यविशानाहनेयसात्यविर्गयेनमस्मृतं । समस्तननत्रारुक्तासम
 यः जनार्दन । यत्कूलसमवाप्रगियविशानाहनेननु । नकत्रातिविधान
 नयाविशानाहनेननुयभनस्यसाम्बत्तनीयूजा निरुलामूनिसरुम । गसाम्ब
 किस्मायकेनेत्रेविष्णुयनायलीषावर्धवर्धयकलुवाविशानाहनेननु
 ०० गियविशानाहनेनरुले ॥ ॥ गतः यत्तिका आय ॥ काथयाकाउ २१ ग्रंथि
 १२ दधकाउ ५४ ग्रंथि २४ यंधकाउ १०८ अघिवासनकाउ ५४ ग्रंथि ३८ गंग
 वतानकाउ २१ ग्रंथि २४ वनमालाकाउ १००८ ग्रंथि ३१ काथवाकाउ ११२ यथ
 १०१ ३ मूलदवस्तुका १४ ॥ गायीयातकु १ ग्रंथि ३१ १०१ ३ मूलदवस्तुका १४ ॥

१०१ ३ मूलदवस्तुका १४ ॥ गायीयातकु १ ला १

मूलयात ॥ खवयातकाउ ५४ ग्रंथि ४८ वंकि ४ उवयातकाउ ५४ ग्रंथि ४
 वंकि ४ धान ॥ काउ ५४ ग्रंथि ३१ वनकायात ॥ दवीनकाउ ५४ ग्रंथि
 ४८ वंकि ४ धान ॥ मूनयाभीनयातकाउ ५४ ग्रंथि सम ॥ गवूठकाउ १० ग्रंथि १०
 ग्रंथकाउ १० ग्रंथि १० सानिग्रामकाउ १२ ग्रंथि १२ धान ॥ दानकाउ ४ ग्रंथि ४८
 कि ४ धनकाउ १५ ग्रंथि ४८ वंकि ४ कलशकाउ २४ ग्रंथि २४ सगुलकाउ १५ ग्रं
 थि १५ गजकाउ १२ ग्रंथि ५८ वलिकाउ ५४ ग्रंथि ५४ गवग्रसकाउ १२ ग्रंथि सम
 कोमाविकाउ २० ग्रंथि २० अग्निकुलकाउ २१ ग्रंथि ३८ वंकि ३८ गुवाकाउ १०
 ग्रंथि १० सूरुलिकाउ २१ ग्रंथि सम ॥ गमयलिंगयातकाउ १० ग्रंथि ५ ॥

[illegible]

२॥थवान॥ ॥कलैखकायाडा॥उं हूं दानय२विघ्नं हूं रुट् ॥दगदिगसं
हललगात्सादनयाय ॥गालगयदिग्वधनं ॥उं अमुयं रुट् ॥ ॥गव
गुननमस्का नं ॥गुंगुनूस्थानमः ॥खवस ॥गंगलागभये२ ॥जवस ॥मूलं
कामकलाकालीदवगाये२ ॥दथस जाय ॥हं सः ॥रुगमुद्रि ॥पाषा
यामः ॥हूं १ गजवतिय ॥हूं ६४ नयानय ॥हूं ३२ खडानिय ॥हूं ३॥
थव२थसंन ॥॥नि ॥ ॥पा॥पुनिस ॥ ॥न्यास ॥हाथजाजयये ॥अ
सफदगभरुनीमनुस्य ॥हूं ६४ मजयय२ ॥मोडस ॥वृहतीकुन्दसं२ ॥
नथूस ॥ग्रीकामकलाकालीदवगाये२ ॥ज्रीबीजाय२ ॥गुध ॥हूं गकिय
२ ॥पालिस ॥हूं कीलकाय२ ॥सर्वो ॥ ॥सर्वगसर्वदासिद्धयविनियोगः ॥
जाये ॥ ॥न्यासः ॥कन ॥धनी ॥स्वाहाअमुयं रुट् ॥उं उं हूं अंगुष्ठायां

[illegible]

वातका. हेनवीषाका. वामपुत्रिहय. महाभगान. बद्रिदाता. नवानुगा. न
नै. मूषुमाता. कल्याण. नलवदि. नलमिह. शु. रुगककालरीष. यमका
हेनवायक. ॥ ॥ श्रीनै. ॥ उ. उ. स. य. ना. य. न. य. य. ज. वा. क. स. म. स. नि. ह. म. ल.
का. कि. ल. ने. ग. ल. य. क. ज. व. र. स. प. ल. स. दी. घ. प. प. दा. ल. मि. वि. ग. स. य. न. म. द. ड. ॥ क.
स. द. ज. न. व. क. न. न. न. ग. य. वि. र. मि. ना. वि. ना. मि. मा. ग. नि. क. न. ल. ल. जि. का. रु. य.
न. का. ॥ आ. क. प. उ. र. ल. मि. न्या. ल. ह. ना. म. म. म. ल. या. स. पी. न. या. उ. म. उ. ज. ना.
ना. प. ह. न. ल. य. ना. ॥ अ. सि. नि. म. ल. य. क. व. ल. न. म. क. ल. म. व. व. ल. ल. न. न. व. न.
गा. क. र. म. क. म. ल. व. द. दि. ॥ पा. ग. य. य. न. न. ना. ग. वा. प. म. द. न. म. व. व.
मि. वा. था. र. ख. र. न. क. न. म. उ. व. म. ना. र. न. ॥ अ. ध. म. ख. म. ल. दी. घ. प. सु. फ. स.
व. उ. र. ना. वि. न. य. दी. द. मि. द. दी. क. लि. का. म. का. ल. लि. ध. ॥ श्री. न. प. य. ॥ ॥
आ. वा. ह. ना. दि. म. डा. ॥ उ. र. ग. व. नि. का. म. क. ल. का. लि. ॥ रु. ग. क. र. ॥ रु. ग. क. र.

ॐ अर्घ्य आचमन स्नान वन्दन श्रुतं पृथु धूप दीपन वयं पूजना
 वमन ॥ मूलन ॥ ७ या अलि ३ ॥ मूडा ॥ ७ ॥ ॥ वल कर्तव्य ॥ १ ॥ ॥ गण
 लपूजन ॥ न्यास ॥ हाथ हनय ॥ अस्त्र श्री कृष्ण साष्टादश भक्त मनु
 स्या ॥ भिन्न ॥ नानद स्रवय २ ॥ मुख ॥ गायत्री कृन्तन म ॥ इदि ॥ ३ ॥ श्री
 कृष्ण य २ ॥ क्री ॥ लि ॥ स्वाहा ॥ पादया ॥ ॥ श्री कृष्ण य अंगुष्ठा र्था
 २ ॥ ॥ गविन्दाय नमः श्री र्था ॥ पीठन म ॥ मा र्था २ ॥ वल लाय श्र
 ना मिका र्था २ ॥ स्वाहा अमु य रुद्र ॥ ॥ ॐ हृदि भिन्न भिन्ना कवच
 अमु य न्यम ॥ ॐ नमो रुगवत सदा सदा न्याय अमु य रुद्र ॥ दिव्य
 धन ॥ ॥ पीठ पूजा ॥ ॐ श्री धन गोक य २ ॥ ॐ मधुका य २ ॥ ॐ

कूर्मायः नलदीपा नलमधुया कल्युटका नलवदिकाये नलसिंहास
 नाय २ ॥ म ॥ ॐ नमो रुगवत विष्णु वसु तम न वासु देवाय सवी तम स या ग
 य पद्मापी ॥ तम न म ॥ ॥ श्री ॥ ॐ रुद्र दीवन को निकान्त मणि र्वा व द्वा
 वने सपियं श्रीवत्सा कृ मदाव को मु रु धन पी गाम्ब वं सुन्दन ॥ गायत्री नानय
 ना तुपला चित्त न न ॥ ग ॥ ग पर्स या वृत्तं ॥ गविन्द कन व धू वादन पन दिव्या क
 रु र्वै रुद्र ॥ श्री न पूर्य न म ॥ ॥ श्री वा रु नादि ॥ श्री पुन पा र्थ कृष्ण य २ ॥ ॐ
 अर्घ्य आचमन स्नान वन्दन पृथु धूप दीप दद ॥ ॥ ७ या अलि ॥ ३ ॥ मूडा
 खवस ॥ श्री लक्ष्मी नमः ॥ ३ ॥ ॐ वस ॥ न सन सुखे २ ॥ ३ ॥ गला ग म
 ॥ ॐ नमो रुगवत वासु देवाय २ ॥ गनू ॥ ॐ कंटी र्वा व न म या

यः ॥ ॐ मे सत्यादिदधवताभ्या नमः ॥ १० ॥ मे महादेवाय ॥ ३ ॥ गंगा
 वृद्धा च नै ॥ ॐ गत्वा यामि ॥ ॐ त्वमस्य ॥ ॐ आया ॥ ॐ देवस्य ॥ ॐ गत्वा ॥ ॐ वृद्धस्य ॥
 ॐ वत्वा ॥ ॐ दाना ॥ ॐ दिनयाम ॥ ॐ सफस्य ॥ ॐ वक्रय ॥ ॐ देवि ॥ ॐ नमः
 १० ॥ ॐ अम्ब ॥ ॐ ग्रीष्म ॥ ॐ समरस्य ॥ ॐ विष्णवे ॥ ॐ कृष्णस्य ॥ ॐ
 ग्रीष्मस्य ॥ ॐ वावका ॥ ॐ सहस्रग्री ॥ ॐ सूप ॥ ॐ लक्ष्मि न ॥ ॐ नृपति
 ॥ ॐ धनसि ॥ ॐ गङ्गासि ॥ ॐ या ॥ ॐ अन्न ॥ ॐ नमः ॥ ॐ ममा ॥
 पुतिष्ठा ॥ ॥ जय ॥ मूलने १० ॥ ॥ १४ ॥ २० ॥ १० ॥ खव १० ॥ जव १० ॥
 ॥ मा पाल १० ॥ खनया १० ॥ नक्रस ॥ जय ममर्षी ॥ ॥ मृति ॥ ॐ नमः
 स्य महादेवेति ॥ ॐ आयदानवेति ॥ ॐ यनमानवेति ॥ ॥ धनं सुभूक ॥
 जय ॥ ॐ ॥ धय मं खपूयक ॥ ॐ नवीननीलदस्या

मे नीलदीवजवाचने । वल्लवीनन्दने वन्दे कृष्णं । मायात्मनूचिर्षी ॥ ॐ अ
 वितयमपनयेति ॥ ॐ या सोपप्रासनस्तेति ॥ ॐ या कृष्णन्दुष्टावति ॥
 ॐ आवाहनं नाजानामि । न जानामि विमर्शं । पूजां वापि न जानामि । क्रम
 स्वर्गगदीश्वर ॥ अङ्गन्यादि ॥ पुष्पम ॥ ॥ दक्षिण ॥ देवाभीष्टी ॥ ॐ
 ॥ ॐ सहस्रग्रीष्म ॥ ॥ न्याससिकाय ॥ कां हृदादि ॥ कस्तीतने ॥ ॐ
 यथा मकि पूजिता सिद्धमस्व ॥ विमर्शं ॥ निम्ना ॥ स्वर्गकायनदु
 देवाय ॥ ॐ पूजा ॥ ॐ निम्ना ॥ स्वर्गवासी ॥ २ ॥ ३ ॥ मं खवासी खनथमहा
 य ॥ वननथय ॥ देवया स्वाने ॥ ॐ ॥ ॥ मं खरुमदा देव स्ववाक्य
 दूयक ॥ ॐ मं खर्षी ॥ ॐ वयला ॥ ॐ मनिर्क ॥ ॐ वापनि ॥ ॐ गत्वा